प्रेम—पुकार

॥ श्रीहरिः ॥

मामनुस्मर

मामनुस्मर

॥ प्रेम-पुकार ॥

गंगाराम अशोक कुमार
कोयला बाजार कानपुर-१

लेखक–हरिदास गङ्गाशरण शर्मा (शील)
एम० ए० चन्दौसी द्वारा विरचितम्

१५८ वीं बार] [२०००

॥ श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

॥ नम्र निवेदन ॥

प्रेमी भक्त वृन्द !

"उर प्रेरक रघुवंश विभूषण" की प्रेरणा से १९३० में इस पुस्तक की प्रथम कविता लिखी गई जिसको भक्तों ने बहुत पसन्द किया और "मोहन मुक्तावली" नामक पुस्तक के अतिरिक्त अलग-अलग पत्रों पर भी वह प्रभाती छपी और बांटी गई। इसकी विशेष मांग देखकर प्रेमाष्टक एवं विश्व-संगीत आदि के साथ ३८ इन्द्रवज्रा छन्दों में इसको "प्रेम–पुकार" के रूप में प्रथम बार प्रकाशित किया गया था। भक्तों का विशेष आग्रह होने पर प्रातः स्मरण पंचक तथा प्रार्थना पचकादि कविताएं भी प्रेम–पुकार में सम्मिलित कर दी गई हैं। भक्तों एवं भगवान की कृपा का ही यह फल है और उन्हीं को अर्पण है—

"त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेव समर्पये"

प्रेम–निवास) श्री पूर्णिमा (भक्तों का विनम्र दास
चन्दौसी) सं० २०३० ("शील"

।। प्रातः स्मरण पंचकम् ।।

(१)

प्रातः स्मरामि जननी-चरणारविन्दं,
संसार-सागर-समुत्तरणैक-सेतुम् ।
प्रातः स्मरामि गुरुदेव-पदारविन्दं,
अज्ञानघोरतिमिरान्ध-विनाश-हेतुम् ।।

(२)

प्रातः स्मरामि गणनाथ-पदारविंदं,
देवैर्नुतं सकल-विघ्न-विनाश-हेतुम् ।
प्रातः स्मरामि भुवनेश-पदारविन्दं,
मुक्तिप्रदं सकल-कल्मष-नाश-हेतुम् ।।

(३)

प्रातः स्मरामि गिरिजा-चरणारविन्दं,
कामादि-दोष-जलपूर्ण-भवाब्धि-पोतम् ।

(४)

प्रातः स्मरामि गिरिजेश पदारविन्दं,
धर्मार्थकाम-भव-मोक्ष-विधान हेतुम्॥

(४)

प्रातः स्मरामिमिथिलेश-सुतांघ्रि-पद्मं,
अज्ञान-नाश-हरिभक्त-विकास-हेतुम्।

प्रातः स्मरामि रघुनाथ–पदारविन्दं,
ब्रह्मा-सुरेश-शिव-नारद-सेव्यमानम्।

(५)

प्रातः स्मरामि बृषभानु-सुतांघ्रि-पद्मं,
प्रेमामृतैक – मकरन्द – रसौघपूर्णम्।

प्रातः स्मरामि मधुसूदन–पादपद्मं,
प्रेमास्पदं सजल-मेघरुचिं मनोज्ञम्॥

॥ प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥

॥ प्रार्थना ॥

गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है,
भूलूँ न मैं नाम कभी तुम्हारा।
निष्काम होके दिन रात गाऊँ,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
देहान्तकाले तुम सामने हो,
बंशी बजाते, मन को लुभाते।
गाता यही मैं तन नाथ! त्यागूँ,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

।। श्री गोपालकृष्णायनमः ।।

।। प्रभाती ।।

करारविन्देन पदारविन्दं,
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
श्री मद्यशोदांकगतं प्रसन्नं,
बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि ।।

श्री यशोदा मैया की गोद में प्रसन्न बदन होकर निज कर कमल से पद कमल को मुख कमल में प्रविष्ट करते हुए श्री भगवान् बालमुकुन्द को शिर से प्रणाम करता हूं ।

माता यशोदा हरि को जगावें,
जागो, उठो, मोहन नैन खोलो ।
द्वारे खड़े गोप बुला रहे हैं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।

गोपी दही छाछ बिलो रही हैं,
मीठा करे शब्द बड़ा मथानी ।
गातीं मथानी संग नारि सारी,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
ले ले करों में निज पींजरों को,
कोई पढ़ाती शुक सारिका को ।
गाते यही हैं शुक सारिका भी,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
बैठी लिये हैं दुहनी अनोखी,
गो दुग्ध काढ़ें अबला नवेली ।
गो दुग्ध धारा संग गा रही हैं,

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
माला रही गूँथ सुबाम कोई,
ले गोद बैठी अपने लला को ।
गा गा सुनाती निज बाल को है,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
धोये किसी ने मुख बालकों के,
ले गोद में प्यार करें, दुलारें ।
हे लाल, गावो तुम संग मेरे,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

कोई जगाती निज लाल को है,
जागो दुलारे टुक नैन खोलो।
ये नाम बोलो हरि के सलोने,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
कोई नवेली पति को जगावे,
प्राणेश जागो, अब नींद त्यागो।
बेला यही है हरि गीत गाओ,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
कासार के मध्य लला विलोको,
कैसे मनोहरि सरोज फूले।
बैठे सभा में अलि गा रहे हैं,

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
देखो पखेरू तरु-डालियों में,
तातें सुहाते मधुरे सुरों में ।
पत्ते हथेली मृदु हैं बजाते,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
आकाश के बीच विहंग - माला,
आनन्द - मग्ना हरि-नाम-मत्ता ।
ऊँचे स्वरों से हरि गीत गातीं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

जागे पुजारी हरि मन्दिरों में,
आके जगाते हरि को सभी यों ।
हे शील-सिन्धो अब नेत्र खोलो,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

॥ प्रेमाष्टक ॥

या दोहने[१]ऽवहनने[२] मथनो[३]पलेप[४]-
प्रेङ्खेङ्खना[५]र्भरुदितो[६]क्षण[७]मार्जनादौ[८] ।
गायन्तिचैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो ।
धन्याब्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयानः ॥

भगवान् में चित्त को लगाये हुए जो बृजगोपियाँ गद्-गद् कण्ठ से १-गोवहन करने, २-धान कूटने, ३-दधि मन्थन करने, ४-घर लीपने, ५-पालना हिलाने, ६-रोते बालकों को चुपाने, ७-रसोई आदि को धोने, ८-आंगन आदि बुहारने में हर समय नेत्रों में प्रेमाश्रु भर कर गोविन्द का नाम गाती रहती हैं ।

श्रीमद्भागवत ।

धन्या सभी हैं ब्रज गोपिकायें,
गातीं सदा जो हरिनाम प्यारा ।
गो दोहते भी यह गीत गातीं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
ले हाथ में मूसल ओखली में,
हैं कूटती धान सुबाम कोई ।
है टूटता तार नहीं कभी ये,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
डाली मथानी दधि में किसी ने,
है ध्यान आया दधि-चोर का ही ।
गद्-गद् हुआ कण्ठ पुकारती है,

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
है लींपती आंगन नारि कोई,
गोविन्द आवें, मम गेह खेलें ।
ध्यानस्थ ये ही पद गा रही हैं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
सोया किसी का सुत पालने में,
डोरी करों से जब खींचती है ।
गाती यही हैं हरि-प्रेम-मत्ता,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

रोया किसी का जब लाल प्यारा,
हो प्रेम-मग्ना उसने पुकारा ।
रोओ न गाओ तुम संग मेरे,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
झारी उठाई कर में किसी ने,
धोती रसोई मन में विचारे ।
गोपाल जीमें हम गीत गावें,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
कोई नवेली घर को बुहारैं,
गोपाल को ही मन में निहारे ।
आनन्द 'शील' से यही पुकारे,

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

॥ विश्व संगीत ॥

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण--
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्ताऽसि वेद्यं च परं च धाम,
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥

हे प्रभु तुम आदि देव, तुम पुरातन पुरुष, तुम्हीं इस विश्व के परम आधार हो । तुम्हीं ज्ञाता तुम्हीं ज्ञेय एवं तुम्हीं परम धाम हो । अनन्त रूप । तुम्हीं ने इस विश्व को विस्तृत अथवा व्याप्त किया है ।

श्रीमद्भागवद्गीता ।

देखो जहां भी यह दीखता है,
सोचो जरा भी यह सूझता है ।
सर्वत्र ये ही स्वर गूँजता है,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।
राकेश तारागण भानु विद्युत,
श्यामा घटायें जलबिन्दु सारे ।
आकाश में ये ध्वनि हैं लगाते,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।
पक्षी अनेकों नभ पन्थ जाते,
कैसी सुधा की झाड़ियां लगाते ।
मीठे स्वरों में हरि गीत गाते,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।
स्त्रोतस्विनी के कल-नाद—मध्ये,

उत्तुंग–शैलाग्र--जल--प्रपाते ।
हैं शब्द ये ही श्रुति मध्य आते,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
ग्रामों घरों में बन निर्जनों में,
अट्टालिका में, कुटिया धरा में ।
हैं गूँजते नाम यही सभी में,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
वारीश की प्रेम-मयी तरंगें,
भावेश भाव-भरी उमंगें ।
संकेत द्वारा दिन रात गातीं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
दीनों अनाथों दलितों क्षुधार्तों,
सर्वस्व-हीनों, रमणी--विहीनों-
के चित्त में भी यह याद आती,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
विद्यानुरागी निज पुस्तकों में,
अर्थानुरागी धन-संचयों में ।
ये ही निराली ध्वनि ढूंढ़ते हैं,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥
देहात्मवादी परमाणुवादी,

सामाज्यवादी अथ साम्यवादी।
गाते यही हैं मन मार सारे,
गोविन्द दामोदर माधवेति॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति॥
सद्ग्रन्थ षड्दर्शन, वेद चारों,
इंजील देखो, कुरआं बिचारों।
पाओ सभी में यह मन्त्र प्यारे,
गोविन्द दामोदर माधवेति॥
गोविन्द दामोदर माधवेति॥
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति॥
भाषा विभिन्ना परिपाटि भिन्ना,
है भिन्न पूजा, पर भाव दूजा।
देखो कहीं न सब धर्म गाते,
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।
योगी यती तापस साधु सारे,
प्यारे बिना जो दुखिया बिचारे ।
एकान्त में 'शील' यही पुकारें,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।

।। चेतावनी ।।

जागो जरा तो मन में बिचारो,
क्या साथ लाये अरु ले चलोगे ।
जावे यही साथ, सदा पुकारो,
गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।

नारी धरा धाम सुपुत्र प्यारे।
सन्मित्र सद्बान्धव द्रव्य सारे॥
कोई न साथी हरि को पुकारो,
गोविन्द दामोदर माधवेति॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति॥
नाता भला क्या जग से हमारा ?
आये यहाँ क्यों ? कर क्या रहे हैं ?
सोचो बिचारो, हरि को पुकारो,
गोविन्द दामोदर माधवेति॥
गोविन्द दामोदर माधवेति।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति॥
सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे,
माता-पिता 'शील' सुबन्धु प्यारे।
भूलो न भाई, दिन रात गाओ,

गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।।
क्यों अटके मंझधार में,
हो भवसागर पार ।
'शील' पढ़ें जो प्रेम से,
प्रति दिन प्रेम - पुकार ।।

।। प्रार्थना पंचक ।।

नमामि नारायण दीनबन्धो,
हरे मुरारे करुणैकसिन्धो ।
हरो हमारे अघ नाथ सारे,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमोऽस्तुते देववर प्रसीद ।।
न नाथ विद्या बल है न शक्ति,

न बुद्धि श्रद्धा न पदाब्जभक्ति ।
प्रभो सहारा चरणाम्बुजों का,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।।
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
नमोऽस्तुते देववर प्रसीद ।।
न तात माता न सुबन्धु भ्राता,
न पुत्र त्राता अपना दिखाता ।
बिना तुम्हारे हरि कौन मेरा,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।।
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
नमोऽस्तुते देववर प्रसीद ।।
तुम्हीं पिता-मात सुबन्धु प्यारे,
तुम्हीं सुविद्या धन हो हमारे ।
सखे ! न रूठो अब मान जाओ,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।।
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
नमोऽस्तुते देववर प्रसीद ।।

किये अनेकों अघ हाय मैंने,
विचार मेरा मन कांपता है।
क्षमा करो पाप समस्त मेरे,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।।
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।।

।। गीता सार ।।

श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

'मामनुस्मर'

'प्रसीद देवेश जगन्निवास'

'सर्व-भूत-हिते-रताः'

प्रचारक—
गंगाराम—अशोक कुमार
कोयला बाजार
कानपुर

बम्बई छापाखाना कानपुर—१

फोननं० ६३२४५

गंगाराम-अशोककुमार

७७।१ कोयला बाजार

कानपुर-१

समस्त प्रकार के

कोयले के थोक एवम्

फुटकर विक्रेता

मूल्य—प्रेम पाठ